IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

कोविड–19 महामारी के बाद भारतीय अर्थव्यवस्था की वर्तमान स्थिति, चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ

डॉ. रावेन्द्र सिंह पटेल
सहा. प्राध्या. अर्थशास्त्र
शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सतना

शोध सरांश (Abstract) – कोरोना महामारी की शुरूआत चीन के वुहान प्रांत से दिसम्बर 2019 से हुयी। कोरोना वाइरस कई प्रकार के विषाणुओं का एक समूह है। यह आर.एन.ए. वायरस होते है। कोरोना महामारी में भारत को भी अपने गिरफ्त में ले लिया था। भारत सरकार के स्वास्थ्य मंत्रालय के 31 मार्च 2022 के आंकड़ो के अनुसार भारत में कोविड के 42489004 केस आए है तथा 521129 लोगो की मृत्यु हुयी। भारत के लिए सुखद स्थिति यह है, कि एक्टिव केसो की संख्या मात्र 14307 रह गयी है। बाकी के सारे मरीज स्वस्थ्य हो चुके हैं। कोविड–19 के कारण मार्च 2020 में लॉकडाउन लगाना पड़ा, जिससे वैश्विक अर्थव्यवस्था के साथ–साथ भारतीय अर्थव्यवस्था भी चरमरा गयी और जिसके परिणाम स्वरूप भारत की जी.डी.पी. ग्रोथ पहली तिमाही (जनवरी–मार्च 2020) में भारी गिरावट के साथ (-) 23.9 प्रतिशत हो गयी। जो कि पूरे विश्व में सर्वाधिक गिरावट थीं। लेकिन व्यापक टीकाकरण अभियान, सेवा क्षेत्र में तेजी से हो रही बेहतरी और उपभोग एवं निवेश में त्वरित वृद्धि की संभावनाओं के बदौलत देश में 'V' आकार की रिकव्हरी प्राप्त हो रही है। जो कि भारत के लिए बेहद सुखद है।

शब्द कुंजी (Key-words) – कोविड–19, जी.डी.पी., 'V' आकार रिकव्हरी, अर्थव्यवस्था, मौद्रिक नीति, राजकोषीय नीति।

प्रस्तावना (Introduction) – कोरोना वाइरस कई प्रकार के विषाणुओं का एक समूह है। जो स्तनधारियों और पक्षियों को रोग उत्पन्न करता है। यह आर.एन.ए. वायरस होते है। जिसकी गहनता हल्की शर्दी–जुकाम से लेकर अति गंभीर जैसे मृत्यु तक हो सकती है। चीन के वुहान शहर से उत्पन्न होने वाला कोविड–19 वायरस तेजी से फैल कर संपूर्ण विश्व को अपने गिरफ्त में ले लिया। सितम्बर 2020 में भारत में कोरोना वायरस की पहली लहर अपने चरम पर थीं। उस वक्त एक दिन में सबसे ज्यादा 97 हजार नये संक्रमित मरीजो के केस सामने आये। 6 महीने बाद अप्रैल 2021 से देश में कोरोना वायरस की दूसरी लहर ने कहर बरपा दिया। नये संक्रमित मराजो में बाढ़ सी आ गयी। कई दिनों तक प्रतिदिन कोविड केसो की संख्या 3 लाख से ऊपर हो गयी तथा मृत्यु दर में भारी वृद्धि देखने को मिली। वर्ष 2022 में कोरोना की तीसरी लहर ने भारत में कदम रखा, लेकिन भारी मात्रा में वैक्सिनेशन के कारण तीसरी लहर

लगभग निष्प्रभावी रही। भारत सरकार के स्वस्थ्य मंत्रालय के 31 मार्च 2022 के आंकड़ो के अनुसार भारत में काविड के 42489004 केस सामने आए तथा 521129 लोगो की मृत्यु हुयी है। भारत के लिए सुखद स्थिति यह है, कि भारत में एक्टिव केसो की संख्या घट कर मात्र 14307 रह गयी है। बाकी के सारे मरीज स्वस्थ्य हो चुके है।

कोविड–19 ने न केवल वैश्विक अर्थव्यवस्था को प्रभावित किया है, बल्कि भारतीय अर्थव्यवस्था को भी धारासाई कर दिया है। कोविड महामारी के कारण देश में मार्च 2020 में लॉकडाउन लगा जिससे सारी आर्थिक गतिविधियों में विराम सा लग गया। इस महामारी ने न केवल मांग पक्ष को प्रभावित किया है, बल्कि पूर्ति पक्ष को भी धारासाई कर दिया है। उद्योग बंद होने से उसमें कार्य कर रहे लोग बेरोजगार हो गये। जिससे उनकी आय ही बंद हो गयी। इसके साथ–साथ छोटे–छोटे व्यवसाय भी बंद हुये। जिससे उसमें कार्यरत लोग भी बेरोजगार हो गए। इसका परिणाम यह रहा की मांग में भारी गिरावट देखने को मिली। मांग मं कमी के कारण निवेश भी हतोत्साहित हुआ। जिससे उद्योग धंधो में विराम सा लग गया। वास्तव में यह स्थिति महान मंदी (1929) के बाद सबसे बड़ी मंदी थी। इससे प्रभावपूर्ण मांग में भारी कमी देखने को मिली है। किन्स के अनुसार उपभोग प्रवृत्ति कम होने से आय में K (गुणक) गुना कमी हो जाती है। क्योंकि यह आगे और पीछे दोनो ओर कार्य करता हैं। भारत में भी यही प्रवृत्ति देखने को मिली है। हैराड–डोमर मॉडल के अनुसार विनयोग बढ़ने से आय, उपभोग एवं पूर्ति दोनो बढ़ती है। और आर्थिक विकास के पथ पर आगे की ओर अग्रसर होता है। लेकिन महामारी ने विनयोग को कम करके मांग एवं पूर्ति दोनो को प्रभावित करके निश्चय ही देश के विकास पथ में रोड़ा उत्पन्न किया है।

शोध के उद्देश्य (Objectives of the research) –

1. कोविड–19 का भारतीय जी.डी.पी. पर प्रभाव का अध्ययन।
2. कोविड–19 का भारतीय कृषि, उद्योग एवं सेवा क्षेत्र पर प्रभाव का अध्ययन।
3. भारत की मौद्रिक एवं राजकोषीय नीति के प्रभाव का अध्ययन।

शोध प्रविधि (Research Methodology) – यह शोध–पत्र मूलतः द्वितीयक संमको पर आधारित है। इसमें अध्ययन के लिए वर्ष 2020 एवं 2021 को लिया गया है। द्वितीयक संमको का संकलन आर्थिक सर्वेक्षण 2021, नीति आयोग की रिर्पोट, आई.एम.एफ. एवं वर्ल्ड बैंक की रिर्पोट से किया गया है। संमको के विश्लेषण में प्रतिशत विधि एवं आवश्यकतानुसार अन्य सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया है।

कोविड–19 महामारी का भारत की जी.डी.पी. पर प्रभाव (Impact of Covid-19 on Indian GDP)

आर्थिक समीक्षा 2020–21 के अनुसार भारत की जी.डी.पी. ग्रोथ वर्ष 2017–18 में 7 प्रतिशत, 2018–19 में 6.1 प्रतिशत एवं 2019–20 में 4.2 प्रतिशत थीं। आर्थिक समीक्षा 2021–22 के अनुसार वर्ष 2020–21 में 7.3 प्रतिशत की गिरावट के बाद वर्ष 2021–22 में भारतीय अर्थव्यवस्था के 9.3 प्रतिशत बढ़ने का अनुमान है। वर्ष 2022–23 में जी.डी.पी. की विकास दर 8–8.5 प्रतिशत रह सकती है। अंर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष के वर्ल्ड एकोनॉमिक आउटलुक

के अनुसार वर्ष 2022–23 में भारत की रियल जी.डी.पी. विकास दर 9 प्रतिशत और 2023–24 में 7.1 प्रतिशत रहने की संभावना व्यक्त की गयी है, जिसमें भारतीय अर्थव्यवस्था आगामी 3 वर्ष तक दुनिया की सबसे तेजी से उभरती अर्थव्यवस्था बनी रहेगी। यह अनुमान भारत के लिए बेहद सुखद है। इसी प्रकार का अनुमान विश्व बैंक एवं एशियाई विकास बैंक ने भी लगाया है। विश्व बैंक के अनुसार वर्ष 2022–23 में भारत की जी.डी.पी. ग्रोथ 8.5 प्रतिशत एवं एशियाई विकास बैंक के अनुसार 7.5 प्रतिशत रहेगी। भारत की जी.डी.पी. बढ़ने का कारण प्रभावी राजकोषीय एवं मौद्रिक नीति है। इन दोनो नीतियों के माध्यम से देश की अर्थव्यवस्था में मौद्रिक तरलता बढ़ाने का प्रयास किया जा रहा है। जिससे मांग में वृद्धि होगी और विनियोग को प्रोत्साहन मिलेगा। सरकार राजकोषी नीति के माध्यम से पंप प्राईमिंग प्रभाव डालने का प्रयास कर रही है।

कोविड–19 का कृषि, उद्योग एवं सेवा क्षेत्र पर प्रभाव **(Impact of Covid-19 on Agricultur, Industry & Service Sector) -**

कोविड–19 के कारण कृषि, उद्योग एवं सेवा क्षेत्र भी बुरी तरह प्रभावित हुयी है। हॉलाकि कृषि क्षेत्र में इस महामारी का प्रभाव कम देखने को मिला है। कृषि क्षेत्र ही वह क्षेत्र रहा है। जिसने अर्थव्यवस्था को गति प्रदान किया गया है। पिछले 2 वर्षो में कृषि क्षेत्र में विकास देखा गया है। देश के कुल मूलवर्धन (GVA) में महात्वपूर्ण 18.8 प्रतिशत (2021–22) की वृद्धि हुयी है। इसी तरह 2020–21 में 3.6 प्रतिशत तथा 2021–22 में 3.9 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गयी है। वर्ष 2014 की एस.ए.एस. रिर्पोट की तुलना में फसल उत्पादन से शुद्ध प्राप्तियों में 22.6 प्रतिशत की वृद्धि हुयी है।

अप्रैल–नवम्बर 2021 के दौरान औद्योगिक उत्पादन सूचकांक (आई.आई.पी.) बढ़कर 17. 4 प्रतिशत हो गया है। यह अप्रैल–नवम्बर 2020 में (–) 15.3 प्रतिशत था। अप्रैल–नवम्बर 2020 में यह गिरावट टूरिज्म उद्योग के धराशाही होने, मनुफैक्चुरिंग उद्योग, रियल स्टेट उद्योग में भारी गिरावट के कारण हुयी है। जी.वी.ए. की सेवाओं में वर्ष 2021–22 की जुलाई–सितम्बर तिमाही में पूर्व–महामारी स्तर को पार कर लिया है। समग्र सेवा क्षेत्र जी.वी.ए. में 2021–22 में 8.2 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी होने की उम्मीद है। अप्रैल–दिसम्बर 2021 के दौरान रेल माल भाड़ा ने पूर्व महामारी के स्तर को पार कर लिया है। वर्ष 2021–22 की पहली छमाही के दौरान सेवा क्षेत्र ने 16.7 बिलियन अमेरिकी डालर से अधिक एफ.डी.आई. प्राप्त किया गया है। जो भारत के कुल एफ.डी.आई. प्रभाव का लगभग 54 प्रतिशत है। आई.टी.–बी.पी.एम. सेवा राजस्व 2020–21 में 194 बिलियन अमेरिकी डालर के स्तर पर पहुंच गया है। इस अवधि के दौरान इस क्षेत्र. में 1.38 लाख कर्मचारी शामिल किए गये है। सेवा निर्यात में 2020–21 की जनवरी–मार्च तिमाही में पूर्व महामारी स्तर को पार कर लिया है। इसमें 2021–22 की पहली छमाही में 21.6 प्रतिशत की वृद्धि हुयी है। साफ्टवेयर एवं आई.टी. सेवा निर्यात के लिए वैश्विक मांग से इसमें मजबूती आई है। भारत अमेरिका एवं चीन के बाद विश्व में तीसरा सबसे बड़ा स्टार्ट–अप इको सिस्टम बन गया है। नये मान्यता प्राप्त स्टार्ट–अप की संख्या 2021–22 में बढ़कर 14 हजार से अधिक हो गयी है। जो कि 2016–17 में मात्र 735 थीं।

निष्कर्ष **(Conclusion)** – निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है, कि कोविड–19 ने भारतीय अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रो को बुरी तरह प्रभावित किया है। भारतीय अर्थव्यवस्था में नोटबंदी एवं जी.एस.टी. के कारण उद्योग एवं सेवा क्षेत्र में जो स्लो–डाउन आया था, उसमें कोविड–19 ने आग में घी डालने का काम किया है और इसका परिणाम यह रहा कि देश की जी.डी.पी. ग्रोथ वर्ष 2020 की पहली तिमाही (जनवरी–मार्च) में भारी गिरावट के साथ (–) 23.9 प्रतिशत हो गयो। जो कि पूरे विश्व में सर्वाधिक गिरावट थीं। लेकिन देश ने प्रभावी राजकोषीय एवं मौद्रिक नीति के बदौलत उद्योग एवं निवेश में त्वरित वृद्धि के कारण देश में 'V' आकार की रिकव्हरी प्राप्त हो रही है। जो कि देश के लिए बहुत सुखद है। भारत सरकार जहां एक ओर मनरेगा, आवास सहायता, निःशुल्क खाद्यान वितरण एवं अन्य योजनाओं के माध्यम से लोगों की क्रय शक्ति में वृद्धि करके मांग को बढ़ाने का प्रयास कर रही है। वहीं दूसरी ओर स्टार्ट–अप, आजादी का अमृत महोत्सव, आत्म निर्भर भारत आदि के माध्यम से निवेश (पूर्ति) को बढ़ाने का प्रयास कर रही है। वास्तव में इसी तरह यदि मांग एवं पूर्ति दोनो पक्ष मजबूत होते रहे तो निश्चय ही भारतीय अर्थव्यवस्था उच्च शिखर पर होगी।

संदर्भ **(References) -**

1. Gourinchas, P-O (2020), *"Flattening the Pandemic and Recession Gures"*. VoxEU.org. 3 June.
2. Hansen lars Peter. and Thomas J. Sargent. 2001, "Robust control and model uncertainty" American Economic Review 91(2), 60-66.
3. Internationa Monetary Fund. "*World Economic Outlook*" Various issues.
4. World Bank. "*Global Economic Prospects*" June 2020 & 2021.
5. Indian Economic Survey 2020-21.